SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

हाईस्कूल स्तर के छात्र–छात्राओं पर इन्टरनेट के बढ़ते प्रयोग से होने वाले प्रभावों का अध्ययन

श्वेता शर्मा, एम.एड. शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
गुंजन शर्मा, शिक्षा संकाय,
प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
श्वेता शर्मा, एम.एड. शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
गुंजन शर्मा, शिक्षा संकाय,
प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/07/2022
Revised on : -----
Accepted on : 27/07/2022
Plagiarism : 09% on 21/07/2022

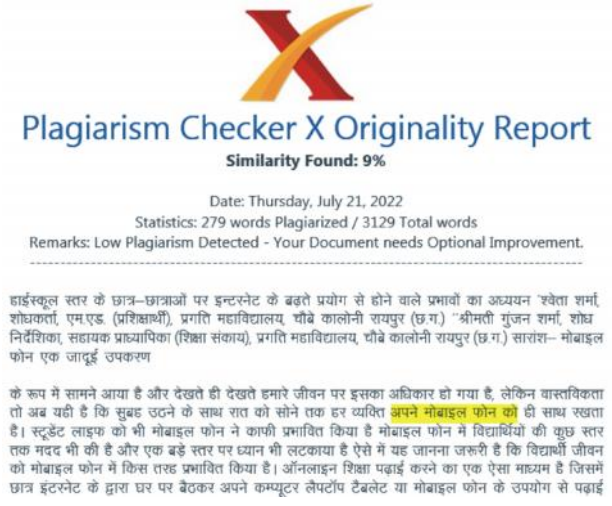

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 9%

Date: Thursday, July 21, 2022
Statistics: 279 words Plagiarized / 3129 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

हाईस्कूल स्तर के छात्र–छात्राओं पर इन्टरनेट के बढ़ते प्रयोग से होने वाले प्रभावों का अध्ययन 'श्वेता शर्मा, शोधकर्ता, एम.एड. (प्रशिक्षार्थी), प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.) "श्रीमती गुंजन शर्मा, शोध निर्देशिका, सहायक प्राध्यापिका (शिक्षा संकाय), प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.) सारांश– मोबाइल फोन एक जादूई उपकरण

के रूप में सामने आया है और देखते ही देखते हमारे जीवन पर इसका अधिकार हो गया है, लेकिन वास्तविकता तो अब यही है कि सुबह उठने के साथ रात को सोने तक हर व्यक्ति अपने मोबाइल फोन को ही साथ रखता है। स्टूडेंट लाइफ को भी मोबाइल फोन ने काफी प्रभावित किया है मोबाइल फोन में विद्यार्थियों की कुछ स्तर तक मदद भी की है और एक बड़े स्तर पर ध्यान भी लटकाया है ऐसे में यह जानना जरूरी है कि विद्यार्थी जीवन को मोबाइल फोन में किस तरह प्रभावित किया है। ऑनलाइन शिक्षा पढ़ाई करने का एक ऐसा माध्यम है जिसमें छात्र इंटरनेट के द्वारा घर पर बैठकर अपने कम्प्यूटर लैपटॉप टैबलेट या मोबाइल फोन के उपयोग से पढ़ाई

शोध सार

मोबाइल फोन एक जादूई उपकरण के रूप में सामने आया है और देखते ही देखते हमारे जीवन पर इसका अधिकार हो गया है, लेकिन वास्तविकता तो अब यही है कि सुबह उठने के साथ रात को सोने तक हर व्यक्ति अपने मोबाइल फोन को ही साथ रखता है। स्टूडेंट लाइफ को भी मोबाइल फोन ने काफी प्रभावित किया है मोबाइल फोन में विद्यार्थियों की कुछ स्तर तक मदद भी की है और एक बड़े स्तर पर ध्यान भी लटकाया है ऐसे में यह जानना आवश्यक है कि विद्यार्थी जीवन को मोबाइल फोन में किस तरह प्रभावित किया है। ऑनलाइन शिक्षा पढ़ाई करने का एक ऐसा माध्यम है जिसमें छात्र इंटरनेट के द्वारा घर पर बैठकर अपने कम्प्यूटर लैपटॉप टैबलेट या मोबाइल फोन के उपयोग से पढ़ाई करते है। इस शिक्षा प्रणाली के माध्यम से आप दुनिया के सिकी भी कोने मे रहकर अपने शिक्षक से जुड़ सकते है। इसी तरह शिक्षक भी किसी भी देश या जगह से अपने छात्रों को बढ़ा सकते है जैसे कि हम सभी जानते है कि आज का युग एक डिजिटल युग है जिसमें टीचर कंप्युटर और लैपटॉप जैसे उपकरणों की मदद से अपने स्टूडेंट को शिक्षा दे रहे है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ऑनलाइन शिक्षा का उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन' करना था। प्रस्तुत अध्ययन हेतु रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में से 10 विद्यालयों के 5 शासकीय एवं 5 अशासकीय विद्यार्थियों को शामिल किया गया जिनकी कुल संख्या 100 रखी गई है। जिसमें 50 छात्र तथा 50 छात्राओं का चयन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में देव निदर्शन पद्धति का उपयोग कर संमकों का संग्रहण किया गया है। इसके लिए प्रश्नावली विधि का प्रयोग कर समंको को

अनुसंधानकर्ता द्वारा प्राप्त किया गया। इसके लिए उद्देश्य आत्मक निर्देशन पद्धति 10 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया, जिनमें पांच शासकीय और पांच निजी स्तर के विद्यालय है। शोधकर्त्ता ने अपनी अध्ययन समस्या के लिये आवश्यक सूचनाएँ तथा तथ्य प्राप्त करने के लिये स्वनिर्मित 'प्रश्नावली' का इस्तेमाल किया परिणामों में देखा गया की ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के शारीरिक विकास पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

मुख्य शब्द

ऑनलाइन शिक्षा, इंटरनेट, विकास.

भूमिका

शिक्षा मानव विकास की कुंजी है शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली अनवरत प्रक्रिया है बालक बालिका अपने वातावरण में प्रत्येक समय कुछ न कुछ सीखता ही रहता है तथा दूसरों को सिखाता रहता है प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से सीखता रहता है या सीखने सिखाने की प्रक्रिया ही शिक्षा है शिक्षा मनुष्य के अंदर छिपी शक्तियों का समुचित विकास करना है समाज का सबसे ज्यादा लगता है क्योंकि कोई दो व्यक्ति पूर्ण रूप से समान नहीं होते हैं प्रत्येक व्यक्ति का शारीरिक मानसिक और बौद्धिक विकास होता है प्रत्येक व्यक्ति की रूचि एवं क्षमताओं में विभिन्नता होती है यही समाज की मूल अवधारणा है और यही उसका मूल आधार है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर से जहां प्रवेश के साथ ही बालको मे व्यापक मानसिक परिवर्तन होते हैं उनकी रूचियां और अभिरूचियां विकसित होने लगती है। किसी वस्तु या विषय के प्रति ध्यान केंद्रित करने की क्षमता विकसित होने लगती है। स्मरण शक्ति एवं कल्पना शक्ति का भी विकास होने लगता है इनका प्रभाव उपलब्धियों पर भी पड़ता है। साथ ही बालक के परिवेश का बालक की उपलब्धियों एवं अभिरूचि पर व्यापक प्रभाव पड़ता है।

शारीरिक विकास पर संचार का प्रभाव आधुनिक समय में संचार साधनों के द्वारा पालकों को स्वास्थ्य संबंधी सूचनाएं प्राप्त होती है। जिनके माध्यम से बालक अपने शारीरिक विकास को संतुलित रूप प्रदान कर सकता है। जैसे दूरदर्शन पर योगाभ्यास के कार्यक्रमों एवं आसनों के माध्यम से बालक अपने शरीर के प्रति गंभीर हो सकता है। साथ ही बालक अपनी शारीरिक विकृतियों को दूर कर सकता है, और अपने शरीर का संतुलित विकास कर सकता है। इस प्रकार संचार माध्यमों के द्वारा बालक ज्ञान प्राप्त करके अपने शारीरिक विकास को नवीन दिशा प्रदान कर सकता है।

मानसिक विकास का संचार साधनों का प्रभाव बालक की मानसिक विकास में संचार माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका है संचार के साधन द्वारा बालक नवीन साधनों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। उसमें तर्क और चिंतन शक्ति का विकास होता है। दूरदर्शन के द्वारा मोबाइल फोन के द्वारा बालक नवीन घटनाओं का ज्ञान प्राप्त करता है। जैसे डिस्कवरी चौनल द्वारा तर्क और चिंतन का विकास होता है। मोबाइल द्वारा यूट्यूब चौनल से बालक अपने मन की रूचि के अनुसार सीख सकता है। कई कार्यक्रम वह इंटरनेट एवं बेवसाइट के माध्यम से ही सीख सकता है।

अध्ययन का महत्व

मोबाइल फोन के उपयोग से व्यक्ति के जीवन में बहुत परिवर्तन आया है इसी प्रकार विद्यार्थियों के जीवन पर भी मोबाइल फोन का गहरा प्रभाव पड़ा है मोबाइल फोन के सकारात्मक प्रभाव के साथ कुछ हद तक नकारात्मक प्रभाव पड़े है इन परिवर्तनों की तरह लेने के लिए प्रस्तावित शोध समस्या को चुना गया हैं अब छात्र सर्वाधिक जानकारी मोबाइल फोन से प्राप्त करते हैं और उसी से अध्ययन करना भी पसंद करते है तकनीक के इस युग में छात्रों को मोबाइल फोन से पढ़ाई करना अधिक रोचक सरल और सहूलियत भरा लगता है जनसंचार माध्यमों का अभी बालकों की जीवन पर स्पष्ट प्रभाव पड़ा है। दूरदर्शन और मोबाइल फोन का प्रभाव बच्चों के उपर 3 या 4 वर्ष की आयु से ही पड़ने लगता है। इसी प्रकार रेडियों टेप रिकॉर्डर चलचित्र आदि का प्रभाव भी बाल मन पर गहरा पड़ता है। समाचार पत्र पत्रिका एवं पुस्तको का प्रभाव विद्यालय में प्रवेश और अध्ययन के बाद ही पड़ता है क्योंकि

इन साधनों हेतु शैक्षिक ज्ञान की जरूरत पड़ती है। बालक जब पढ़ना–लिखना सीखता है तो वह संचार के साधनों से प्रभावित होता है इस तरह बाल विकास में संचार साधनों की भूमिका को पूर्ण रूप से स्वीकार कर लिया गया है।

ऑनलाइन शिक्षा दुनिया भर के शिक्षा में आसन्न प्रवृत्तियों में से एक है। सीखने का यह तरीका इंटरनेट के माध्यम से किया जाता है। उन्नत तकनीकों के साथ सीखने के तरीके को सरल बना दिया गया है। वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए ऑनलाइन शिक्षा ;व्दसपदम म्कनबंजपवदद्ध एक व्यवहार्य विकल्प बन गई है। पिछले पांच वर्षो में ;व्दसपदम म्कनबंजपवदद्ध ने भारी लोकप्रियता हासिल की है। अब छात्रों को अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए उन पारंपरिक तरीके या फिर उन संस्थानों पर निर्भर होने की आवश्यकता नहीं है वे अब अपनी पढ़ाई कम्प्यूटर और इंटरनेट कनेक्शन के साथ कर सकते है।

ऑनलाइन शिक्षा तकनीक के जरिये लाभ देने के लिए जानी जाती है। यहां नियोजित प्रारूप छात्रों और शिक्षकों के बीच गतिशील संचार के लिए जगह बनाता है। इन संचारों से एक सीखने की प्रक्रिया के माध्यम से एक ओपन एंडेड तालमेल विकसित होता है। जब प्रत्येक व्यक्ति दूसरों के कार्य पाठ्यक्रम पर चर्चा और टिप्पणियों के माध्यम से एक दृष्टिकोण या राय प्रदान करता है, तो इससे छात्र को बेहतर सीखने में लाभ होता है।

पूर्व में किए गए शोध कार्य

भारत में किए गए शोध अध्ययन

श्री वास्तव एवं दबे (2021) ने अपने शोध परिणाम में ऑनलाइन शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को सकारात्मक पाया विषय संबंधी शंका समाधान करने एवं ज्ञान को बढ़ाने में इस शिक्षा कीमहती भूमिका पाई गई तथा यह भी पाया गया कि यदि तकनीकी समस्याओं का निवारण कर दिया जाए तोइस शिक्षा की प्रभावशीलता में वृद्धि हो सकती है।

जेनाब बेहजदी, आजम गफरी (2011) ऑनलाइन शिक्षा और पारंपरिक शिक्षा के लक्षण पर एक शोध कार्य किया गया और निष्कर्ष स्वरूप यह पाया गया कि दूरस्थ शिक्षा उन शिक्षार्थियों के लिए डिजाइन की गई शिक्षा है जो शिक्षण संस्थान या शिक्षा प्रदाता से कुछ दूरी पर रहते हैं। यह एक शैक्षणिक संस्थान के साथ नामांकन और अध्ययन है जो छात्रों के लिए संगठित, औपचारिक सीखने के अवसर प्रदान करता है। एक अनुक्रमिक और तार्किक क्रम में प्रस्तुत, अनुदेश को पूरी तरह से या मुख्य रूप से दूरस्थ अध्ययन द्वारा, लगभग किसी भी मीडिया के माध्यम से पेश किया जाता है। ऐतिहासिक रूप से, शिक्षा का इसका प्रमुख माध्यम मुद्रित सामग्री है, हालांकि गैर–प्रिंट मीडिया अधिक से अधिक लोकप्रिय हो रहा है। इसमें ई–मेल और वेब–आधारित वितरण प्रणालियों के माध्यम से वीडियोटेप, सीडी या डीवीडी रॉम, ऑडियो रिकॉर्डिंग, फेशियल, टेलीफोन संचार, और इंटरनेट का उपयोग शामिल हो सकता है। जब प्रत्येक पाठ या खंड पूरा हो जाता है, तो छात्र योग्य प्रशिक्षकों द्वारा सुधार, ग्रेडिंग, टिप्पणी और विषय वस्तु मार्गदर्शन के लिए स्कूल को सौंपा गया कार्य उपलब्ध कराता है। सही किए गए असाइनमेंट को छात्र को वापस कर दिया जाता है। यह विनिमय एक व्यक्तिगत छात्र–प्रशिक्षक संबंध को बढ़ावा देता है, जो दूरस्थ शिक्षा अनुदेश की पहचान है। ऐतिहासिक रूप से, अधिकांश दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम प्रकृति में व्यावसायिक थे, लेकिन आज पाठ्यक्रमों को सभी उम्र के छात्रों के लिए अकादमिक, पेशेवर और व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए पेश किया जाता है। कई विशिष्ट कार्यक्रम हैं, जैसे कि अंधे व्यक्तियों के लिए और श्रवण दोष वाले छोटे बच्चों के माता–पिता के लिए।

विदेशों में किए गए शोध अध्ययन

डेरौइन, रेनी ई.य फ्रिट्जशे, बारबरा ए और सालास, एडुआर्डो (2004) ''ई–लर्निंग का अनुकूलनः शिक्षार्थी–नियंत्रित प्रशिक्षण के लिए अनुसंधान–आधारित दिशा निर्देश।'' इस अध्ययन का उद्देश्यः लेखक अपने लेख की शुरुआत प्रशिक्षण के लिए ईलर्निंग की सामान्य क्षमता पर टिप्पणियों के साथ करते हैं और शिक्षार्थी नियंत्रण के लिए इसके विशिष्ट लाभों को बताते हैं। निर्देशात्मक डिजाइन तत्व जैसे सामग्री, अनुक्रम, पेसिंग और निर्देशात्मक नियंत्रण का

स्थान शिक्षार्थी को उस सामग्री को चुनने की अनुमति देता है जो उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण है और विषयों के लचीले अनुक्रम के माध्यम से अपनी गति से आगे बढ़ने के लिए। निष्कर्षः शिक्षार्थी–नियंत्रित प्रशिक्षण के रूप में महसूस किया गया ई–लर्निंग कार्यस्थल सीखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

डोननेल, वर्जीनिया (2004) ''उन्नत कला कक्षाओं में कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के प्रति छात्र और संकाय के दृष्टिकोण के बीच संबंध।'' इस अध्ययन का उद्देश्यः यह अध्ययन सेमेस्टर 2004 के दौरान मध्य टेनेसी राज्य विश्वविद्यालय में उन्नत कला कक्षाओं में कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के प्रति संकाय के दृष्टिकोण के बीच संबंधों की जांच करता है। यह अध्ययन कला, नृत्य, संगीत और रंगमंच के विषयों पर केंद्रित था, और इसमें लगे हुए संकाय और छात्रों तक सीमित था। 3000 और 4000 स्तर की कक्षाओं में। निष्कर्षः परिणाम ने संकेत दिया कि कंप्यूटर के प्रति संकाय और छात्र के रवैये के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं था, हालांकि, संकाय और छात्रों को कंप्यूटर पसंद करने के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध पाया गया। कंप्यूटर के प्रति संकाय और छात्र दोनों का रवैया कंप्यूटर विशेषज्ञता के कथित स्तर से महत्वपूर्ण रूप से संबंधित था। शोधकर्ता ने निष्कर्ष निकाला कि कला संकाय सदस्यों और छात्रों दोनों के पास कंप्यूटर के साथ अधिक सक्षम था।

समस्या कथन

''ऑनलाइन शिक्षा का उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन''।

प्रकार्यात्मक परिभाषा

ऑनलाईन शिक्षाः ऑनलाईन एजुकेशन से तात्पर्य है जो किसी भी स्थान एवं किसी भी इलेक्ट्रानिक माध्यम से दी जाती है। इसके लिये इंटरनेट और आधुनिक साधनों की आवश्यकता होती है बिना इसके ऑनलाईन एजुकेशन संभव ही नहीं है।

उच्चतर माध्यमिक स्तरः उच्चतर माध्यमिक स्तर पे कक्षा 11 एवं 12वीं के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। इसमें माध्यमिक एवं महाविद्यालयिन स्तर के बीच की अवस्था होती है।

अध्ययन का उद्देश्य

- ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के शारीरिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के मानसिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

H_{01} ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के शारीरिक विकास पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

H_{02} ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के मानसिक विकास पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

H_{03} ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

अध्ययन का परिसीमन

- प्रस्तुत अध्ययन हेतु रायपुर जिले का चयन किया गया।
- प्रस्तुत अध्ययन हेतु रायपुर जिले के अंतर्गत रायपुर शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया।
- प्रस्तुत अध्ययन हेतु 10 विद्यालयों के 5 शासकीय एवं 5 अशासकीय विद्यार्थियों को शामिल किया जाएगा। इस अध्ययन के लिए उत्तर दाताओं की कुल संख्या 100 रखी गई है। जिसमें 50 छात्र तथा 50 छात्राओं का चयन किया गया।
- प्रस्तावित अध्ययन करने के लिए रायपुर शहर के विद्यालय के विद्यार्थियों को लिया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों तक सीमित है।

शोध विधि के चयन का आधार

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा ''ऑनलाइन शिक्षा का उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन'' में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में ''ऑनलाइन शिक्षा का उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन'' में सार्वभौम रायपुर शहर के 10 विद्यालयों का चयन किया गया है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् समस्त विद्यार्थियों जनसंख्या का कार्य करेंगी।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में देव निदर्शन पद्धति का उपयोग कर संमकों का संग्रहण किया गया है। इसके लिए प्रश्नावली विधि का प्रयोग कर समंको को अनुसंधानकर्ता द्वारा प्राप्त किया गया। इसके लिए उद्देश्य आत्मक निर्देशन पद्धति 10 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया, जिनमें पांच शासकीय और पांच निजी स्तर के विद्यालय है।

चर

स्वतंत्र चरः प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों पर प्रभाव स्वतंत्र चर है।

आश्रित चरः प्रस्तुत अध्ययन में ऑनलाइन शिक्षा आश्रित चर है।

उपकरण

शोधकर्त्ता ने अपनी अध्ययन समस्या के लिये आवश्यक सूचनाएँ तथा तथ्य प्राप्त करने के लिये स्वनिर्मित 'प्रश्नावली' का इस्तेमाल किया। साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी इस अध्ययन के लिये एक शोध उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण

1. मध्यमान : मध्यमान (Mean) $M = \frac{\Sigma X}{N}$
2. प्रमाप विचलन : S.D. $= \sqrt{\frac{\sum d^2}{N}}$
3. क्रांतिक अनुपात : $CR = \frac{M_1 \sim M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}}$

परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन के लिए ऑनलाईन शिक्षा का प्रभाव जानने के लिए उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से न्यादर्श लिए गए तथा परिकल्पना के लिए प्रत्येक विद्यालय से 5–5 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया है। इस अध्ययन में स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची की सहायता से प्राप्त मूल प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात निकाल कर परिकल्पना की पुष्टि की गई है।

परिकल्पना क्रमांक 01

H_{01} ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के शारीरिक विकास पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक 01: ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के शारीरिक विकास पर प्रभाव की संख्या, माध्य, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	कांतिक अनुपात	सार्थक/सार्थक नहीं
छात्र	50	22.64	43.50	1.6423	सार्थक अंतर नहीं पाया गया
छात्राएं	50	11.14	23.68		

df = 98

व्याख्या

सारणी क्रमांक 1 में ऑनलाईन शिक्षा का प्रभाव उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् 50 छात्र व उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में 50 छात्राओं का शारीरिक विकास पर प्रभाव का परीक्षण किया गया। ऑनलाईन शिक्षा का छात्रों के शारीरिक विकास पर प्रभाव का माध्य 22.64 व प्रमाप विचलन 43.50 प्राप्त हुआ। ऑनलाईन शिक्षा का छात्राओं के शारीरिक विकास के प्रभाव का माध्य 11.14 व मानक विचलन 23.63 प्राप्त हुआ। 98 df पर क्रांतिक अनुपात के .05 स्तर पर सारणी मूल्य का मान 1.99 है। माध्यों में अंतर की सार्थकता के क्रांतिक अनुपात की गणना की गई जो कि 1.64 प्राप्त हुआ। जो कि सारणी मूल्य गणना मूल्य से कम है इसलिए यह अंतर सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक H_{01} ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के शारीरिक विकास पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा स्वीकृत होती है।

आरेख क्रमांक 01: ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के शारीरिक विकास पर प्रभाव की संख्या, माध्य एवं मानक विचलन दर्शाने वाला आरेख

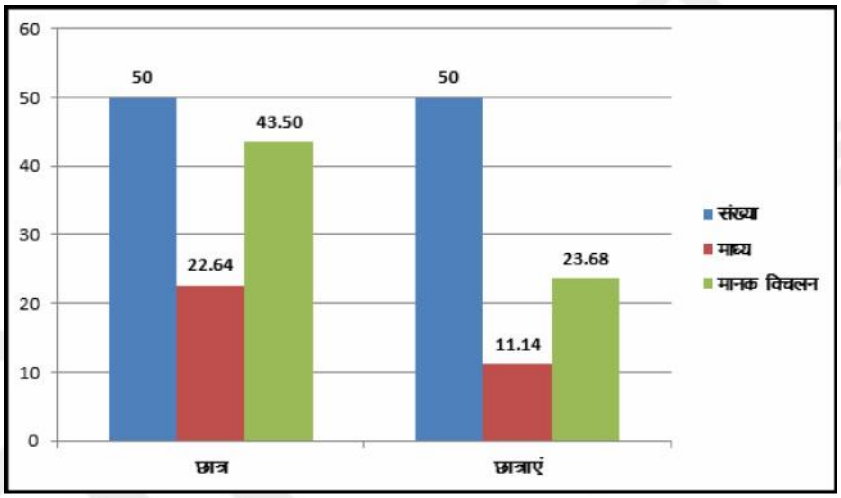

परिकल्पना क्रमांक 02

H_{02} ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के मानसिक विकास पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा

सारणी क्रमांक 02: ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के मानसिक विकास की संख्या माध्य, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	कांतिक अनुपात	सार्थक/सार्थक नहीं
छात्र	50	45.28	3.085	3.37795	सार्थक अंतर पाया गया
छात्राएं	50	22.28	6.880		

df = 98

व्याख्या

सारणी क्रमांक 2 में ऑनलाईन शिक्षा का प्रभाव उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् 50 छात्र व उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में 50 छात्राओं का मानसिक विकास पर प्रभाव का परीक्षण किया गया। ऑनलाईन शिक्षा का छात्रों के मानसिक विकास पर प्रभाव का माध्य 45.28 व प्रमाप विचलन 45.28 प्राप्त हुआ। ऑनलाईन शिक्षा का छात्राओं के मानसिक विकास के प्रभाव का माध्य 22.28 व मानक विचलन 6.88 प्राप्त हुआ। 98 df पर क्रांतिक अनुपात के .05 स्तर पर सारणी मूल्य का मान 1.99 है। माध्यों में अंतर की सार्थकता के क्रांतिक अनुपात की गणना की गई जो कि 3.38 प्राप्त हुआ। जो कि सारणी मूल्य गणना मूल्य से अधिक है इसलिए यह अंतर सार्थक है। अतः परिकल्पना क्रमांक H_{02} ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के मानसिक विकास पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा अस्वीकृत होती है।

आरेख क्रमांक 02: ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के मानसिक विकास की संख्या, माध्य एवं मानक विचलन दर्शाने वाला आरेख

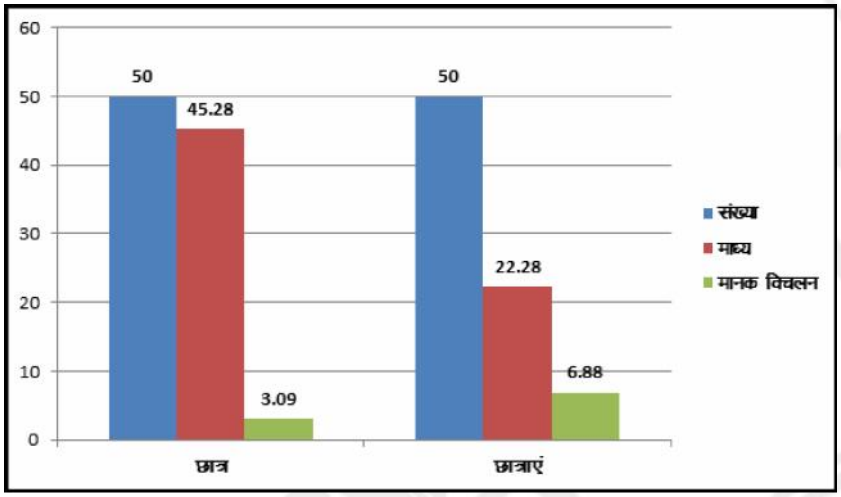

परिकल्पना क्रमांक 03

H_{03} ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक 03: ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास की संख्या, माध्य, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थक/सार्थक नहीं
छात्र	50	22.68	7.42	4.81402	सार्थक अंतर पाया गया
छात्राएं	50	11.14	9.36		

df = 98

व्याख्या

सारणी क्रमांक 3 में ऑनलाईन शिक्षा का प्रभाव उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् 50 छात्र व उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में 50 छात्राओं का बौद्धिक विकास पर प्रभाव का परीक्षण किया गया। ऑनलाईन शिक्षा का छात्रों के बौद्धिक विकास पर प्रभाव का माध्य 22.68 व प्रमाप विचलन 7.42 प्राप्त हुआ। ऑनलाईन शिक्षा का छात्राओं के बौद्धिक विकास के प्रभाव का माध्य 11.14 व मानक विचलन 9.36 प्राप्त हुआ। 98 df पर क्रांतिक अनुपात के .05 स्तर पर सारणी मूल्य का मान 1.99 है। माध्यों में अंतर की सार्थकता के क्रांतिक अनुपात की गणना की गई जो कि 4.81 प्राप्त हुआ। जो कि सारणी मूल्य गणना मूल्य से अधिक है इसलिए यह अंतर सार्थक है। अतः परिकल्पना क्रमांक H_{03} ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के मानसिक विकास पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया

जाएगा अस्वीकृत होती है।

आरेख क्रमांक 03: ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास की संख्या, माध्य एवं मानक विचलन दर्शाने वाला आरेख

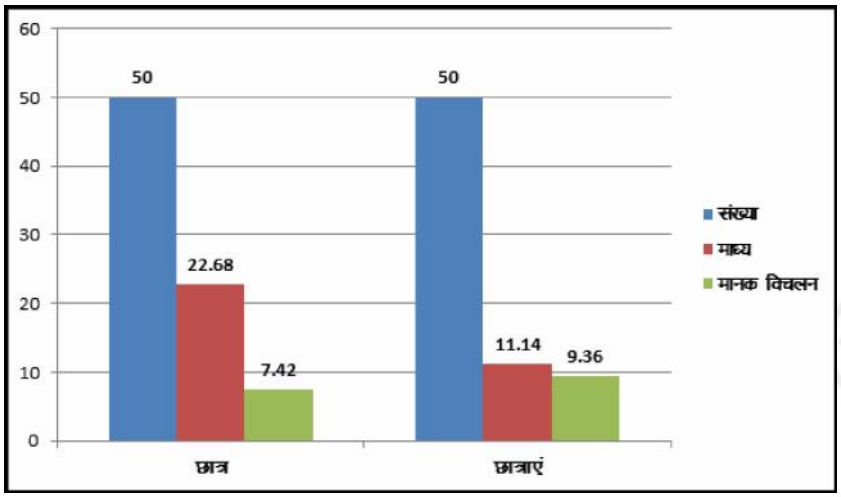

निष्कर्ष

ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों के शारीरिक विकास पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

सुझाव

- ऑनलाईन शिक्षा से विद्यार्थियों के व्यवहार एवं मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है और साथ ही साथ उनकी शैक्षिक उपल्बधता पर भी इसका प्रभाव पड़ता है।
- पाठ्यक्रम पूरा नहीं हो पा रहा है ऑनलाईन शिक्षा के आ जाना चाहिए। जिससे समाज और संस्कृति के प्रति सकारात्मक सोच उत्पन्न हो सके।
- विद्यार्थी रूचि से ऑनलाईन पढाई नहीं कर रहें हैं। जिससे शैक्षिक कार्यक्रम को प्रसारित किया जाए।
- आज के प्रतियोगिता के युग में र्प्रत्येक अभिभावक अपने बच्चों को जीवन के पथ पर सफलतापूर्वक अग्रसर होते देखने चाहते है और यह शिक्षाप्रद ऑनलाईन कार्यक्रम से ही संभव है।
- विद्यालय बच्चे का दूसरा घर होता है। इसलिए अध्ययन में दृश्य–श्राव्य सामग्री से संबधित शिक्षण सामग्री (टेलीविजन एवं सिनेमा) सुझाएं जा सकते है।

अनुकरणीय अध्ययन

- महाविद्यालयीन स्तर के छात्र तथा छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य पर ऑनलाईन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।
- विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर ऑनलाईन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।
- ऑनलाईन शिक्षा से प्राथमिक स्तर के बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर ऑनलाईन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।
- प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियो पर ऑनलाईन शिक्षा एवं ऑफलाईन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।

REFERENCES

1. Abrioux, D. (2001), Guest editorial. International Review of Research in Open and Distance Learning. 1(2). (www. irrodl.org/vl.2.html)

2. Ackermann, Ernest (1996). Learning to use the Internet: An introduction with examples and exercises. New Delhi: BPB Publications.

3. Adogbeji, Oghenevwogaga Benson, & Toyo, Oghenevwogaga David (2006). The impact of the internet on research: the experience of Delta State University, Nigeria. 8(2), accessed http:.//libr.unl.edu.2000/LPP/ppv8n2.htm

4. Loan, F.A. (2011). Internet use by the college students across disciplines: a study. *Annals of Library and Information Studies*, 58, 118-127 retrieved Sept. 25, 2012 from http://nopr.niscair.res.in/bitstream/ 123456789/12183/1/ALIS%2058(2)%20118-127.pdf

5. Livingstone, S., & Helsper, E. (2010). Balancing opportunities and risks in teenagers‘ use of the Internet: the role of online skills and Internet self-efficacy. *New Media and Society, 12*, 309-329.

6. Oliver, R, Omari, A., & Herrinton, J. (1998), Exploring student interactions in collaborative World Wide Web computer-based learning environments. *Journal of Educational Multimedia and Hypermedia*, 7(2/3), 263-287.

7. O‘Quinn, L., and Corry, M. (2002), ¯Factors faculty from participating in distance education . *Online Journal of Distance Learning Administration.* 5(4).that deter

8. Vidyachathoth, Kodavanji B, Kumar N. A. , Pai S. R. (2014) Correlation between affect and Internet addiction in undergraduate medical students in Mangalore. J Addict Res Ther 5: 175. doi: 10.4172/2155-6105.1000175 retrieved on July 24, 2014 from www.omicsonline.org

9. Wiersma, W.(2000). *Research Methods in Education: An Introduction.* Boston: Allyn and Bacon. 9th edition ISBN 0205284922

10. Wilson, Paul N. (1998), ¯To be or not to be? Selected economic questions surrounding distance education: discussion . *American Journal of Agricultural Economics*, 80 (5) pp. 990-993.

11. Yan, Z. (2006). What influences children‘s and adolescents‘ understanding of the complexity of the Internet? *Developmental Psychology, 42,* 418-428. Zemke, R. (1986), ¯The rediscovery of videoconferencing . Training, 23(9), 28-43

****